हरियाली तीज व्रत कथा PDF

शिवजी ने पार्वतीजी को उनके पिछले जन्म की याद दिलाने के लिए तीज की कहानी सुनाई। शिवजी कहते हैं– हे पार्वती तुमने मुझे वर के रूप में पाने के लिए हिमालय पर घोर तपस्या की। अन्न–जल त्याग दिया, पत्ते खाये, सर्दी–गर्मी, वर्षा कष्ट सहे।

तुम्हारे पिता दुखी थे। नारदजी तुम्हारे घर आये और बोले– मैं विष्णुजी के भेजने पर आया हूँ। वह आपकी पुत्री से प्रसन्न है और उससे विवाह करना चाहता है। अपनी राय बताएं।

पर्वतराज प्रसन्नतापूर्वक विष्णुजी से तुम्हारा विवाह करने को तैयार हो गये। नारदजी ने यह शुभ समाचार विष्णुजी को सुनाया, लेकिन जब आपको पता चला तो आपको बहुत दुख हुआ। तुमने मुझे हृदय से अपना पति मान लिया था। आपने अपने मन की बात अपने मित्र को बताई।

तुम्हारे मित्र ने तुम्हें एक घने जंगल में छिपा दिया जहाँ तुम्हारे पिता नहीं पहुँच सके। वहाँ आप तपस्या करने लगे। आपके अदृश्य हो जाने से पिता चिंतित हो गये और सोचने लगे कि यदि इसी बीच विष्णुजी बारात लेकर आ गये तो क्या होगा।

शिवजी ने पार्वतीजी से आगे कहा– तुम्हारे पिता ने तुम्हारी खोज में धरती–पाताल एक कर दिए लेकिन तुम नहीं मिलीं. तुम गुफा में रेत से शिवलिंग बनाकर मेरी आराधना में लीन थे। खुश होकर मैंने मेरी इच्छा पूरी करने का वादा किया. तुम्हारे पिता खोजते–खोजते गुफा तक पहुँच गये।

आपने बताया कि जीवन का अधिकांश भाग शिवजी को पति रूप में प्राप्त करने के लिए तपस्या में व्यतीत हुआ है। आज तपस्या सफल हुई, शिवजी ने

मेरी बात मान ली। मैं आपके साथ केवल एक ही शर्त पर घर चलूंगी यदि आप मेरा विवाह शिवजी से करने को सहमत हों।

पर्वतराज सहमत हो गये। बाद में हमने विधि विधान से शादी कर ली। हे पार्वती! आपके द्वारा किये गये कठोर व्रत के फलस्वरूप हमारा विवाह हो सका। जो स्त्री निष्ठापूर्वक इस व्रत को करती है, उसे मैं मनवांछित फल देता हूं। उसे भी आपकी तरह निरंतर सुहाग का आशीर्वाद मिले।

pdfinbox.com